# वन उत्पादकता संस्थान, रांची

# आजादी का अमृत महोत्सव

# सह

# विश्व पृथ्वी दिवस

## Seven decades of independence-the Indian Forestry at new Crossroads

## दिनांक 22.04.2021

संस्थान के निदेशक डा. नितिन कुलकर्णी के नेतृत्व एवं समूह समन्वयक अनुसंधान डा. योगेश्वर मिश्रा के मार्गदर्शन में दिनांक 22.04.2021 को वन उत्पादकता संस्थान, रांची में ""आजादी का अमृत महोत्सव"" के तत्वावधान में ""आजादी के 75 वर्ष पश्चात वन वर्धन में वैज्ञानिकों का योगदान तथा ""Seven decades of independence-the Indian Forestry at new Crossroads" विषय पर आभासीय मंच द्वारा कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमे संस्थान के 55 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए संस्थान की वैज्ञानिक श्रीमती रुबी सुसाना कुजुर ने आमंत्रित अतिथि डा. हरि शंकर गुप्ता, सेवानिवृत प्रधान मुख्य वन संरक्षक, झारखंड सरकार समेत सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया एवं कार्यक्रम की रुपरेखा प्रस्तुत किया।

संस्थान के निदेशक डा. नितिन कुलकर्णी ने डा. एच.एस.गुप्ता को कार्यक्रम में योगदान देने के लिये आभार प्रकट किया एवं आज के कार्यक्रम की महत्ता पर विस्तार से प्रकाश डाला। "विश्व पृथ्वी दिवस" होने के कारण आज के कार्यक्रम को महत्वपूर्ण बताते हुए डा. कुलकर्णी ने आजादी के बाद से 2021 तक वानिकी की महत्ता, शोध विभाग का योगदान, तब की समस्या और आज की समस्या तथा उसके निदान के लिये उठाए गए कदमों की विस्तार से चर्चा किया। डा. कुलकर्णी ने महामारी कोरोना को वानिकी की दोहन से जोड़ते हुए आक्सीजन की समस्या का मुल कारण वनों का दोहन बताया। कृषि क्षेत्र में हितधारकों का प्रत्यक्ष जुड़ाव तथा जन्संख्या का दबाव वानिकी के ह्रास के मुख्य कारणों मे से है फिर भी 80% वानिकी विविधता बनाए रखना सराहनीय है। जल चक्र, पर्यावरणीय सुधार एवं जीविकोपार्जन में वानिकी महत्ता तथा वन मंत्री श्री प्राकश जावेडकर के सुझाव के अनुसार सामाजिक आवश्यकता के अनुसार वृक्षारोपण पर जोर दिया।

मुख्य अतिथि तथा झारखंड सरकार के पूर्व प्रधान मुख्य वन संरक्षक डा. हरि शंकर गुप्ता ने प्रधानमंत्री के आत्मनिर्भर भारत के लिए ICFRE तथा इसके विभिन्न संस्थानों को वानिकी विस्तार के लिए किए जा रहे शोध कार्यों के लिए महनिदेशक महोदय के नेतृत्व की सराहना की एवं वानिकी विकास के लिये वित्तीय वितरण को तर्कसंगत बनाने में हो रही कठिनाइयों का जिक्र किया। कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य, प्रशासन, पेयजल, सड़क परिवहन आदि को समाज से प्रत्यक्ष रुप से जुड़े होने के कारण इन क्षेत्रों के

लिये वित्तीय प्रावधानों को प्राथमिकता दी जाती है, लेकिन उर्जा जीविकोपार्जन में 40% चारा में, 30% चारागाह में 50% योगदान देने वाले वानिकी की अनदेखी इसके विकास में बाधक बनती है। उन्होने संतोष व्यक्त किया कि कम क्षेत्रफल तथा अधिक जनसंख्या के बावजूद 1.8% वन का होना सराहनीय है। वन्य जीव, वन संरक्षण, फ्लोरा और फौना तथा जीविकोपार्जन में वनों का योगदान की चर्चा करते हुए डा. गुप्ता ने बताया कि डेटा विश्लेषण तथा तकनीकी योगदान वन वर्धन में सहायक हो रही है। Public/private तथा PPP तीनों प्रकार के वानिकी की चर्चा की। विकसित देशों में राजनेताओं सहित विकासशील एवं अविकसित देश भी पर्यावरण प्रदूषण से चिंतित है। भारत सरकार की NTFP पर होने वाली बैठक से काफी उम्मीद की आशा रखते हुए डा. गुप्ता ने शोधकर्मियों को मिलकर समस्या का हल निकालने एवं वन वर्धन में विश्व को मार्गदर्शन के लिये प्रेरित किया। डा. योगेश्वर मिश्रा द्वारा पूछे गये सवाल कि Forest (private or public) समाज को कैसे मदद कर सकता है का उन्होने संतोषप्रद जवाब दिया। रवि शंकर प्रसाद, अंशुमन दास, कन्हाइ लाल डे, मनोज कुमार साहू तथा संतोष कुमार द्वारा पूछे गए प्रश्नों का डा. गुप्ता ने सरल शब्दों में जवाब दिया।

विश्व पृथ्वी दिवस की महत्ता की चर्चा करते हुए संस्थान के निदेशक डा. नितिन कुलकर्णी ने परिचर्चा रखते हुए प्रतिभागियों एवं अतिथियों के विचार को कार्यक्रम में रखा एवं इस अवसर पर ग्रामीण बच्चों के लिये चित्रकला एवं स्लोगन प्रतियोगिता का आयोजन कर सफल प्रतिभागियों को पुरस्कृत करने का आश्वासन दिया।

निदेशक महोदय की अनुमति से श्रीमती रुबी सुसाना कुजूर ने अतिथि एवं प्रतिभागियों का धन्यवाद करते हुए कार्यक्रम समापन की घोषणा की एवं कार्यक्रम को सफल बनाने में डा. शम्भुनाथ मिश्रा, श्री बी.डी.पंडित, श्री सूरज कुमार एवं श्री बसंत कुमार के योगदान की सराहना की।

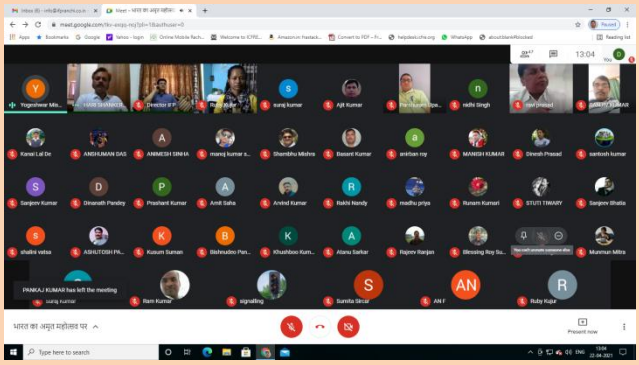

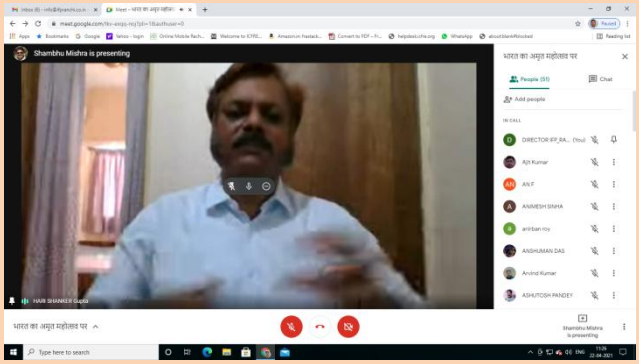


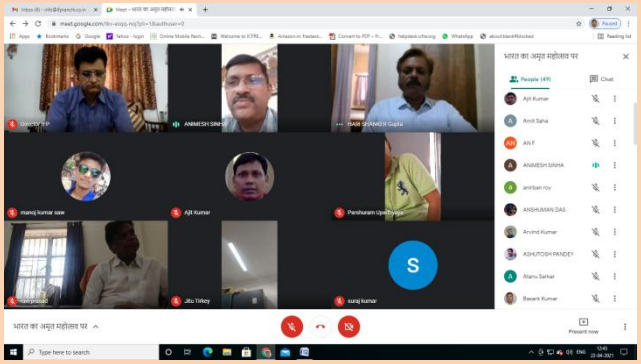

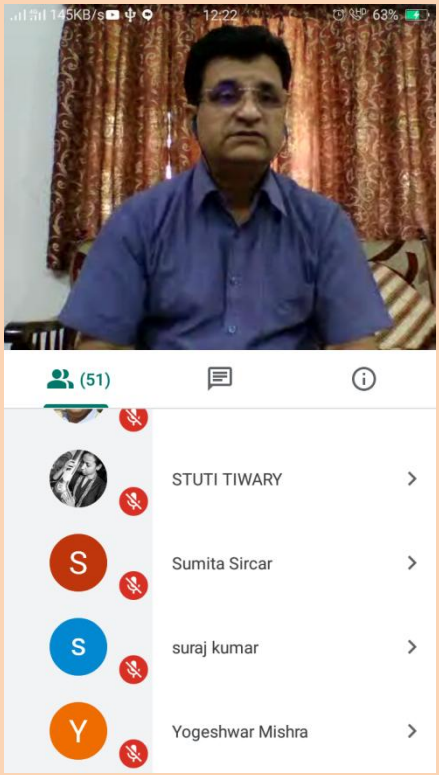


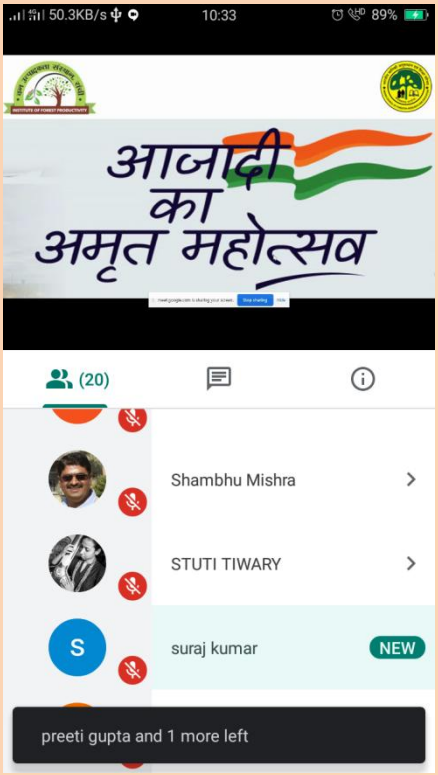


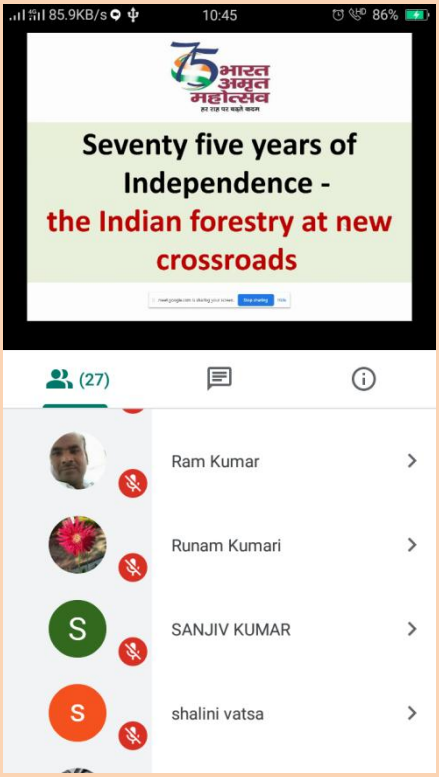


## कार्यक्रम की झलकियां